ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि। ऋग्वेद 8/92/32
हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।
O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 36, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 सितम्बर, 2013 से रविवार 22 सितम्बर, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी की बैठक सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी में विद्यालय के नये भवनों का निर्माण कार्य आरम्भ

गुरुकुल परिवार में उत्साह की लहर

महाशय धर्मपाल जी के नाम से बनेगा विद्यालय का नया ब्लाक

80 वर्ष पश्चात होगा नये भवनों के निर्माण का कार्य आरम्भ

रविवार दिनांक 25 अगस्त को प्रात: 11 बजे महाशय धर्मपाल जी का गुरुकुल कांगड़ी की भूमि पर पदार्पण हुआ तब गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा बैण्ड की धुन से पुष्प वर्षा करके चंदन का तिलक लगाकर यज्ञशाला में उनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, उप-प्रधान सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी, आर्य विद्या सभा कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य

गुरुकुल का निर्माण आधुनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये किया जायेगा

आर्ष गुरुकुल को स्थापित करने की प्रक्रिया आरम्भ होगी

प्रथम दिन 31 लाख रुपये की राशि की घोषणा

गुरुकुल कांगड़ी की सभी संस्थाओं के आधुनिकीकरण के साथ-साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वप्नों को साकार करने का प्रयत्न करेंगे – महाशय धर्मपाल

– शेष पृष्ठ 4 पर

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में पधारने पर यज्ञ करते महाशय जी साथ में हैं एम.डी. एच. परिवार के सदस्य।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में विद्यालय के नए बनने वाले ब्लाक का शिलान्यास करते महाशय धर्मपाल जी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार के नए व्याव्सायाध्यक्ष डॉ. ज्ञानेन्द्र आर्य नियुक्त

बाएं से डॉ. ठुकराल, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल, विनय आर्य ज्ञानेन्द्र आर्य, विजेन्द्र कुमार एवं सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश विद्यालंकार एवं अन्य।

आर.डब्ल्यू.ए. एवं व्यापार मंडल की ओर से आर्यसमाज के नेतृत्व में

उत्तराखण्ड त्रासदी पीड़ितों के लिए 10 लाख रुपये की सामग्री रवाना

– शेष पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

देव के काव्य को देखो

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार। देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान।। ऋग्वेद 10/55/5

अर्थ—**(विधुम्)** शत्रुओं को अपने बल से कंपाने वाले **(समने)** संग्राम में **(बहूनाम्)** बहुतों को **(दद्राणम्)** पराजित करने में समर्थ **(युवानम् सन्तम्)** बलवान् पुरुष को भी **(पलितः जगार)** बुढापा निगल जाता है। **(देवस्य)** उस प्रभु के **(महित्वा)** महान् सामर्थ्य से युक्त **(काव्यम् पश्य)** जगत्-रूप काव्य को देखो **(अद्य ममार)** जो आज मर गया वह **(ह्यः समान)** बीते कल भली-भाँति श्वास ले रहा था।

किसी भी पदार्थ की उत्पत्ति होते ही उसमें छः विकार या परिवर्तन होने प्रारम्भ हो जाते हैं—

१. **जायते**—विभिन्न परमाणुओं के संयोग या अनेक वस्तुओं अथवा अवयवों से किसी पदार्थ या वस्तु की उत्पत्ति अथवा निर्माण होना।

२. **अस्ति**—द्रव्य की सत्ता रूप में विद्यमानता।

३. **विपरिणाम**—परिवर्तन या वृद्धि से पूर्व की अवस्था

४. **वृद्धि**—बढ़ना, वस्तु का पूर्णावस्था में प्रकट होना

५. **अपक्षीयते**—जिन परमाणुओं के संघात से वस्तु का निर्माण हुआ उनका क्रमशः क्षय या ह्रास होना

६. **विनाश**—वस्तु का अपने कारण में लीन होना

इसी भाँति शरीर की भी चार अवस्थाओं का वर्णन सुश्रुत में किया है।

१. वृद्धि-जन्म से लेकर सोलहवें वर्ष तक शरीर एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

२. यौवन—सोलहवें वर्ष से पच्चीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की वृद्धि होकर व्यक्ति पूर्ण युवा हो जाता है।

३. सम्पूर्णता—पच्चीसवें वर्ष से चालीसवें वर्ष तक सब धातुओं की पुष्टि और बुद्धि परिपक्व होती है।

४. क्षीणता—४० से ६० वर्ष तक कुछ मात्रा में शरीरस्थ धातुओं में क्षीणता आती है। यदि संयम और उचित आहार-विहार का सेवन किया जाये तो व्यक्ति इस आयु में भी युवा जैसा ही रह सकता है। साठ वर्ष के पश्चात् बुढापा आने लगता है। (सुश्रुत- १.३५.२९)

मनीषी जनों का कहना है—**युवैव धर्मशीलः स्यात्** युवावस्था में ही मनुष्य को धर्म का आचरण करना चाहिये क्योंकि इस जीवन का कोई ठिकाना नहीं है। वेद सावधान करते हुये कह रहा है—**विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार**—जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमा को प्रातःकाल सूर्य उदित हो उसके तेज को क्षीण कर देता है वैसे ही बुढापा यौवन की सारी मस्ती और बल-पराक्रम को क्षीण कर व्यक्ति की सारी आशाओं-उमंगों को धराशायी कर उसे विवश बना देता है। जिस नौजवान ने रणभूमि में अपने बल-पराक्रम से शत्रुओं को धूल चटाई थी, आज वह स्वयं उसी धूलि में समा रहा है। दूसरों को मल्लयुद्ध में पीठ दिखा चित्त-पट करने वाले मल्ल की पीठ अपना भार भी सहन नहीं कर पा रही है। अपने बुद्धिबल से विद्वत् सभा में सबको परास्त कर पण्डितवर्य की उपाधि से विभूषित पण्डित जनों की बुद्धि अब बालक के समान हो गई है। वे बहकी-बहकी बातें करते दृष्टिगत होते हैं। रूप-लावण्य की छटा से सबको विमोहित कर देने वाली सुन्दरियों के मुख मण्डल झुर्रियों से भर गये हैं और उनकी ओर कोई दृष्टिपात भी नहीं करता।

जिन्हां घर झूमते हाथी हजारों लाखों थे साथी। उन्हां नू खा गई माटी तू सुखकर नीन्द क्यूं सोया॥

बड़े-बड़े राजा, रईस, शक्तिशाली योद्धा, विद्वान् सभी को इस बुढापे रूपी अजगर ने निगल लिया।

जो जाकर न आये वह जवानी देखी। जो आकर न जाये वह बुढापा देखा।

बुढापा जब एक बार आ जाता है तो फिर जाने का नाम नहीं लेता। उसका अन्त चिता में होता है। **पश्य देस्य काव्यम्** उस परमदेव की कारीगरी को देखो **अद्या ममार स ह्यः समानः**=कल तक जो भलीभाँति सब कार्य कर रहा था, आज वह निष्प्राण हो गया है।

जिसकी सदा से गूंजते थे जमीं ओ आसमाँ। मकबरे में दम पुख्त हैं न हूँ है न हाँ॥

बुढापा जीवन का कटु सत्य है जिसे नियन्त्रित तो किया जा सकता है परन्तु सर्वथा रोका जाना सम्भव नहीं है। इसलिये शास्त्रकार कहते हैं।

दुर्बलं बलवन्तं च प्राज्ञं शूरं जडं कविम्। अप्राप्तसर्वकामार्थं मृत्युरादाय गच्छति॥ महा०शा० २७७। २१॥

मनुष्य दुर्बल हो या बलवान्, बुद्धिमान्, शूरवीर अथवा मूर्ख या विद्वान्, मृत्यु उसकी समस्त कामनाओं के पूर्ण होने से पहले ही उसे उठा ले जाती है।

जो संसार में आया है, उसे जाना पड़ेगा ही। उसे अन्त समय में रोना या पछताना न पड़े इसके लिये धर्माचरण करना, सत्य का व्यवहार, मोह-माया का त्याग, काम-क्रोध को छोड़ अहिंसा व्रत का पालन और जप-ध्यान रूप योग का अभ्यास करना चाहिये। ये सभी कार्य उसकी सुरक्षा पट्टी [लाईफ-बैल्ट] के समान हैं जो उसे भवसागर में डूबने से बचा लेंगे। जो ये सोचते हैं कि मेरी सन्तान मेरा उद्धार करेगी या दुःख से त्राण करेगी, वे भ्रम में जी रहे हैं। माता-पिता एवं वृद्धजनों की सेवा करना सन्तानों का कर्त्तव्य है और उसे पूरा करना भी चाहिये परन्तु स्मरण रहे सुख-दुःख मन का विषय है और मन को वश में किये बिना कोई उनसे पार नहीं पा सकता। वृद्धावस्था में मन बच्चों जैसा हो जाता है। इसे अपने वश में करने के लिये युवावस्था में ही साधने की आवश्यकता है। जो यह विचार करते हैं कि अभी हमारा समय मौज-मस्ती करने का है। बुढापे में जप-तप कर लेंगे, वे भूल में हैं।

यस्य वाङ्मनसी स्यातां सम्यक् प्रणिहिते सदा। तपस्त्यागश्च योगश्च स तैः सर्वमवाप्नुयात्॥

महा०शा० २७७.३४॥

जिसकी वाणी और मन सदा एकाग्र रहते हैं और जिसका तप, त्यागमय जीवन है, जो योगाभ्यास करता है, वह उनके द्वारा सब कुछ [मोक्ष] पा लेता है।

- क्रमशः

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु.

आर्यजन अपनी आर्यसमाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"

"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज औचन्दी गांव द्वारा एकत्र राशि

586	सर्वश्री राजकुमार सैनी	500
587	श्रीमती कृष्णा लोहचब	1100
588	रमेश कुमार ठेकेदार	1000
589	राजेन्द्र	500
590	भगत सिंह	100
591	श्रीमती सुशील	500
592	मोहन लाल ध्यानी	100
593	रणधीर सिंह	1100
594	मा. गंगाराम	250
595	प्रेम सिंह	100
596	श्रीमती गुलाब देवी	100
597	श्रीनिवास वर्मा	100
598	श्रीमती विद्यादेवी	100
599	राकेश	150
600	सूरलमल	100
601	निर्मला देवी	100
602	हर्ष सुपुत्र राजेन्द्र	1100
603	जगबीर सिंह (भोला)	500
604	फूल कुमार	100
605	श्रीमती सत्या देवी	100
606	श्रीमती सुमित्रा देवी	100
607	हर्ष आर्य	150
608	वीरेन्द्र	500
609	पं. ईश्वर चन्द	500
610	सुखबीर सिंह	500
611	डॉ. अजय गुप्ता	200
612	डॉ. जी. एस. बारीक	1000
613	डॉ. वीरभान वर्मा	500
614	श्रीमती होशियारी देवी	200
615	**आर्यसमाज भोजूवीर वाराणसी**	**500**

आर्यसमाज सी ब्लाक जानकपुरी द्वारा एकत्र

616	आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक जनकपुरी	11950
617	सोमदत्त महाजन	650
618	ज्ञान प्रकाश कालरा	100
619	श्रीमती विमला जनमेजा	500
620	श्रीमती उषा अरोड़ा	500
621	श्रीमती सन्तोष महाजन	500
622	बी. एस. सैनी	500
623	श्रीमती प्रज्ञा	1000
624	श्रीमती सुनीता	1000
625	प्रवीण कुमार गुप्ता	1000
626	प्रताप सिंह गुप्ता	500
627	श्रीमती नीता कालड़ा	500
628	ज्ञान गुलाटी	500
629	श्रीमती मृदुला	1000
630	अजय सैनी	500
631	श्रीमती उमा मोंगा	1100
632	सत्यपाल	2100
633	श्रीमती राज खुराना	1100

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन द्वारा एकत्र

634	महेन्द्र कुमार गुप्ता	1100
635	श्रीमती सुमित्रा गुप्ता	2100
636	श्रीमती नीलम गुप्ता	2100
637	श्रीमती एवं श्री अशोक गुप्ता	2100
638	श्रीमती सुषमा तनेजा	1500
639	जी. एस. सरीन	1100
640	श्रीमती सुदर्शन ठुकराल	1000
641	लक्ष्मणदेव छाबड़ा	500
642	श्रीमती सरला सुखीजा	700
643	श्रीमती विनोद कुमार	200
644	सुभाष सचदेवा	100
645	**श्री मनीष आर्य, रुद्रपुर**	**1100**
646	प्रकाश वन्त सूद, पीतमपुरा	1000
647	योगेश भगत, पीतमपुरा	500
648	आशीष आर्य, पीतमपुरा	500
649	श्रीमती कृष्णा चौधरी	100

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

वेदविद्या मुख्य तीर्थ है : महर्षि दयानन्द

वेदाविर्भाव एवं ब्रह्मादि ऋषियों द्वारा सर्गारम्भ में वेदों का प्रचार

- मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सक्रिय रूप से सार्वजनिक जीवन पदार्पण के अवसर पर सारी दुनियां को यह तथ्य स्मरण नहीं थे कि वेदों का आविर्भाव ईश्वर के द्वारा प्राचीन व आदि ऋषियों पर कैसे हुआ? महर्षि दयानन्द ने सत्य की खोज करते हुए पाया कि ईश्वर सत्, चित् व आनन्द स्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजन्मा, अविनाशी, अनादि, अमर आदि स्वरूप वाला है। ऐसे स्वरूप वाले ईश्वर से ही सारा जगत जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, सभी ग्रह व उपग्रह, ब्रह्माण्ड, लोक-लोकान्तर, निहारिकायें व तारा समूह आदि सम्मिलित हैं, अस्तित्व में आया है अर्थात् ईश्वर इन सबका निमित्त कारण है। बिना रचयिता के रचना कभी नहीं हुई है और न हो सकती है, अतः इस आधार पर सृष्टि के रचयिता ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है। संसार का कोई भी छोटे से छोटा व अच्छा कार्य बिना बुद्धि के नहीं हो सकता। इतना बड़ा ब्रह्माण्ड यदि ईश्वर ने बनाया है तो वह स्वाभाविक रूप से बुद्धि व ज्ञान का अक्षय भण्डार व खजाना है। ब्रह्माण्ड के आकार प्रकार को देखकर सिद्ध होता है कि वह अनन्त है, अनन्त सत्ता सदैव अनादि ही होगी। स-आदि अर्थात जिनका आरम्भ हुआ है, ऐसी सत्तायें विनाशी व मरणधर्मा होती हैं। यदि ईश्वर अनादि न होकर आदि अर्थात् उत्पत्तिधर्मा मानें, तो जन्म लेने व मृत्यु को प्राप्त होने वाले इस ईश्वर का जनक व पिता भी स्वीकार करना पड़ेगा जिससे अनवस्था दोष उत्पन्न होगा। अतः ईश्वर अनादि व अनन्त ही सिद्ध होता है। ज्ञानपूर्वक की गई कोई भी रचना किसी चेतन सत्ता द्वारा ही सम्भव है। यह ब्रह्माण्ड क्योंकि अनन्त है, अतः ईश्वर अक्षय ज्ञान के भण्डार के साथ सर्वशक्तिमान भी सिद्ध होते हैं। ऐसा ईश्वर जब कोई भी प्राणधारी रचना यथा मनुष्यों की उत्पत्ति करेगा तो उसके जीवन निर्वाह के लिए उसे स्वाभाविक व नैमित्तिक ज्ञान अवश्य ही देगा अन्यथा उस पर यह आरोप आयेगा कि वह ज्ञान देने में अक्षम है। दूसरी ओर वह मनुष्य बिना भाषा व ज्ञान के सम्भवतः एक दिन भी जीवनयापन न कर सके। पशुओं-पक्षियों की बात और है, उन्हें ईश्वर ने इतना स्वभाविक ज्ञान दिया है कि वह अपने जीवन के सभी कार्य सरलता से कर लेते हैं। परन्तु ईश्वर ने मनुष्य में यह भेद किया है कि वह उसे प्रदत्त अल्प वा सीमित स्वाभाविक ज्ञान से अपने सभी दैनन्दिन कार्य सम्पादित नहीं कर सकते। इसके लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। यह भाषा सहित वेद का नैमित्तिक ज्ञान ईश्वर से एक गुरु के रूप में आदि सृष्टिकालीन मनुष्यों को प्राप्त होता है।

ईश्वर ने ज्ञान की प्राप्ति के लिए पांच ज्ञानेन्द्रियां बना कर प्रत्येक मनुष्य को दी हैं। इन इन्द्रियों की सार्थकता तभी होती है जब मनुष्य को इसके साथ भाषा का भी ज्ञान दिया जाये। वर्तमान में माता-पिता अपने शिशु को भाषा का ज्ञान देते हैं जो कि पूरी प्रक्रिया प्राकृतिक एवं प्राचीन हे। आदि सृष्टि में माता-पिता तो थे नहीं, अतः माता-पिता के सभी कार्य ईश्वर ने ही सम्पादित किए। उसने सभी आदिकालीन पहली पीढ़ी के मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान के साथ भाषा का ज्ञान भी प्रदान किया। वेदों के आधार पर हम जानते हैं कि ईश्वर की भाषा वैदिक संस्कृत है। ऐसी ही भाषा का ज्ञान परमात्मा ने सभी स्त्री पुरुषों को सृष्टि के आरम्भ में दिया था। जिस प्रकार एक अन्तिम कारण होता है जिसका अन्य कोई कारण नहीं होता, उसी प्रकार यहां पर आदि स्त्री पुरुषों को ईश्वर ने भाषा का ज्ञान दिया यह स्वीकार करना पड़ता है। अन्य कोई विकल्प ही नहीं है। इसकी पुष्टि इसी से होती है कि संस्कृत सर्व प्राचीन भाषा है जिसका आधार वैदिक संस्कृत है। वैदिक संस्कृत मूल भाषा है जो मनुष्यों द्वारा बनाई गई नहीं है, अपितु ईश्वर प्रेरित या दैवीय है। जिस प्रकार हम सृष्टि से पदार्थों को लेकर उनका उपयोग कर नाना प्रकार के पदार्थों को बनाते हैं, परन्तु वह मूल पदार्थ जिनका हम उपयोग करते हैं, उन्हें हम नहीं बनाते, वह ईश्वर निर्मित हैं, इसी प्रकार मूल भाषा ईश्वर से प्राप्त होती है जिसके आधार पर उसमें परिवर्तन, अपभ्रंश, देश काल आदि कारणों से समय-समय पर विकार व परिवर्तन होते रहने से मानवी भाषायें बनतीं हैं। वैदिक आर्य विद्वानों ने भाषा की उत्पत्ति व इतिहास पर विचार करते हुए यही निष्कर्ष निकाले हैं। ईश्वर द्वारा सभी को भाषाओं का जो ज्ञान दिया गया वह उसने जीवस्थ स्वरूप से अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के आत्मा के भीतर उसकी उपस्थिति के होने व ईश्वर द्वारा जीवात्माओं को प्रेरणा द्वारा दिया गया। जिस प्रकार हम परस्पर वाणी व भाषा द्वारा एक दूसरे को प्रेरित करते हैं, उस वाणी के पीछे आत्मा की प्रेरणा होती है, उसी प्रकार ईश्वर जीवात्मा के भीतर अपनी प्रेरणा से जीवात्मा में भाषा, उसके भावों व अर्थों का प्रकाश कर देता है। इसके होने से सभी मनुष्य आरम्भ में सभी आवश्यक व्यवहार करने में समर्थ हो जाते हैं। भाषा के साथ मनुष्यों को ज्ञान की भी आवश्यकता है जिससे वह सत्यासत्य को जान सकें। ईश्वर है या नहीं, है तो कैसा हैं, कहां है, क्या करता है, उसका स्वरूप कैसा है? हम कौन हैं, हमारा स्वरूप कैसा है, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, क्यों हमारा जन्म हुआ है, हमारे जीवन का जो उद्देश्य है उसकी पूर्ति कैसे होगी, हमें अन्य प्राणियों के प्रति कैसा व्यवहार करना है, आदि अनेकानेक प्रश्न हैं, जिनका उत्तर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिए भी उसे ईश्वर की सहायता की अपेक्षा है। यह सहायता ईश्वर वेदों का ज्ञान प्रदान कर पूरी करता है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार सबसे अधिक पवित्र आत्माओं, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, एक-एक वेद का ज्ञान दिया। यह ज्ञान ईश्वर ने इन जीवों वा ऋषियों की आत्माओं में प्रकट किया। सृष्टि की आदि से परम्परा चली आ रही है जिसमें कहा गया है कि चारों वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। महर्षि दयानन्द ने भी इसकी पुष्टि की है और लोगों को चुनौती दी कि जो चाहें उनकी वेद विषयक वा अन्य मान्यताओं पर वार्तालाप व शास्त्रार्थ कर सकता है। उन्होंने अपनी तरफ से सभी सम्भावित प्रश्नों के समाधानपरक उत्तर अपनी पुस्तकों में स्वयं ही दिए हैं। उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यों को चार वेदों में ज्ञान, कर्म, उपासना व विज्ञान विषयों का आवश्यक ज्ञान दिया है जिसको जानकर व चिन्तन कर वह सभी प्रश्नों के उत्तर पा सकता है और वेदाध्ययन से जो मेधा व विवेक उत्पन्न होता है, उससे स्वयं विज्ञान को विकसित कर जीवन को समुन्नत कर सकता है और साथ ही विज्ञान से होने वाले अनर्थों व बुराइयों में न फंसकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। आईये, स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वेदों के आविर्भाव एवं उसके प्रचार या व्याप्ति के बारे में जो तथ्य व रहस्यों का उद्घाटन किया है, उन्हीं के शब्दों में उन्हें देख लेते हैं। वह लिखते हैं - 'प्रथम सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा, इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया। ब्रह्मा के आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया। जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया। वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य, उनके सदृश नहीं थे। इसलिये पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया। ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि उन अग्नि आदि चार मनुष्यों के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश करके उनसे ब्रह्मादि के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश कराया था। इन ऋषि वचनों को पढ़कर ज्ञात होता है कि ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा चार ऋषियों वा मनुष्यों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया। इन चार ऋषियों ने ब्रह्माजी आदि ऋषियों वा मनुष्यों के ज्ञान में वेद स्थापित किये। पूना प्रवचन अर्थात् उपदेश मंजरी पुस्तक के पांचवें प्रवचन में मनु का उल्लेख कर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि मनु ने लिखा है कि ब्रह्माजी ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों से वेद सीख फिर आगे वेद का प्रचार किया। इस क्रम में महर्षि लिखते हैं कि प्रथमारम्भ में ईश्वर ज्ञान से इन चार ऋषियों के ज्ञान में वेद प्रकाशित हुए और उनसे ब्रह्माजी ने सीखे और पश्चात् उन्होंने सारी दुनिया भर में फैलाये, और उनसे मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त हुआ। यहां महर्षि ने इस विषय में उठने वाली कतिपय शंकाओं का निराकरण भी किया है। वह कहते हैं कि अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन चार ऋषियों को वेद प्रथम प्राप्त हुए। इस पर कोई कहेगा कि ये आदि में चार ही ऋषि क्यों थे, एक या अधिक क्यों न थे, तो ये शंकायें पांच या तीन भी होते, तब भी बनी रहती। यह अशोकवनिका न्याय होगा। पूना प्रवचन इतिहास विषयक आठवें प्रवचन में महर्षि लिखते हैं कि सबों के पश्चात् मनुष्य प्राणी उत्पन्न किया गया, वे मनुष्य बहुत से थे। अन्यान्य मतों में तो दो ही मनुष्य उत्पन्न किए थे ऐसा मानते हैं सो ठीक नहीं है। कुछ आगे वर्णन है 'आर्यावर्त में लोक संख्या बहुत हो गई, उसे न्यून करनी चाहिए, इसलिए आर्य लोग अपने साथ मूर्ख शूद्रादि अनार्य लोगों को लेकर विमान उड़ाते फिरते, जहां कहीं सुन्दर प्रदेश देखा कि झट वहीं पर बस जाते इस प्रकार सब जगत् के प्रत्येक देश में मनुष्य फैले।' पूना प्रवचन के दसवें प्रवचन में महर्षि दयानन्द संक्षिप्त विद्या के इतिहास का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सबसे पहला विद्वान देव ब्रह्मा हुआ। इसने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा चार ऋषियों के पास वेद पढ़ा। इस ब्रह्मा का पुत्र विराट्, उसका पुत्र मनु, मनु के दश पुत्र मरीचि, अत्रि, अंगिरा आदि थे। (इस उल्लेख से यह ज्ञात होता है कि आदि ऋषि ब्रह्माजी ने विवाह किया था)। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण से भी एक उद्धरण प्रस्तुत है। महर्षि प्रश्न करते हैं कि जब परमेश्वर ने पहले सृष्टि रची तब एक-एक दो-दो मनुष्यादिक जाति में रचे अथवा अनेक रचे थे? इसका उत्तर वह देते हैं कि एक-एक जाति में परमेश्वर ने अनेक-अनेक रचे हैं। एक-एक न दो-दो, नहीं। क्योंकि चिंवटी आदि जाति एक द्वीप में एक-एक दो-दो रचते तो द्वीपान्तर में वे कैसे जा सकती इत्यादिक और भी विचार आप लोग कर लेना। यहां गुरुदत्त लेखावली से मुण्डकोपनिषद् के आरम्भ में प्रस्तुत उपयोगी अंश प्रस्तुत करना प्रासंगिक है जो बताते हैं कि विद्वानों में सब से पहला विद्वान ब्रह्मा था जो कि प्रकृति के भौतिक नियमों का पूर्ण ज्ञाता और निपुण शिल्पी था। वह मनुष्य जाति का रक्षक था। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्व को ब्रह्मविद्या सिखलाई जो कि बाकी सब प्रकार की विद्याओं से श्रेष्ठ है। अथर्व ने वही विद्या अंगिरा को, अंगिरा ने भारद्वाज सत्यवाह को और सत्यवाह ने अंगिरस को बताई। इस प्रकार यह परम्परा से चली आई है।

महर्षि के वचनों से ज्ञात होता है कि ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा, इन चार ऋषियों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया। ब्रह्माजी पहले ऐसे आदि मनुष्य-पुरुष वा ऋषि हैं जिन्हें इन चार ऋषियों से एक-एक करके चारों वेदों का

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

विजय पाल जी, गुरुकुल के आचार्य यशपाल जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार जी, रजिस्ट्रार ए.के. चोपड़ा जी, गुरुकुल परिवार के तथा विभिन्न प्रांतों के अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर गुरुकुल परिवार की ओर से सार्वदेशिकआर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, उप-प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक में पधारे हुए सभी पदाधिकारी गणों का दिल्ली और हरियाणा से विशेष रूप से पधारे हुए विद्या सभा के पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए ब्र. राजसिंह आर्य जी ने गुरुकुल परिसर की पवित्रता पर जोर देते हुए कहा की हम सभी को जो इस गुरुकुल की पुण्य भूमि से संबंध रखते है, का विशेषकर जिनका यहां निवास है उन्हें अपने निजी जीवन तथा खान-पान में पवित्रता के उच्च मापदण्डों का प्रयोग करके एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उन्होंने नवनियुक्त कुलपति जी के कार्यो की सराहना करते हुए इस संबंध में हरियाणा सभा के प्रधान श्री आचार्य विजय पाल जी ने इस अवसर पर गुरुकुल परिवार से इसकी उन्नति में हर प्रकार का सहयोग देने की अपेक्षा की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रकाश आर्य जी ने कहा कि यह गुरुकुल कांगड़ी समस्त आर्य जगत की शान का प्रतीक है। तीन सभाओं को केवल इसके संचालन की जिम्मेदारी है अतएव उन्होंने गुरुकुल के समस्त आर्यो से इसकी चँहुमुखी उन्नति के लिए आह्वान किया, साथ ही वहाँ मौजूद दिल्ली और हरियाणा सभा के पदाधिकारियों से कहा कि आपके ऊपर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी आई है जिन हालातों में यह गुरुकुल प्राप्त हुआ है उनको सारा आर्य जगत भलीभांति देख रहा है। आपको बड़े धैर्य से ऋषि मिशन का यह काम पूरा करना होगा। सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने आर्य विद्या सभा के प्रधान बनने पर महाशय धर्मपाल जी का स्वागत करते हुए उनका धन्यवाद किया कि उन्होंने इस जिम्मेदारी को स्वीकार किया है। उन्होंने कहा कि सारे आर्य जगत को महाशय जी पर पूर्ण विश्वास है और भरोसा है कि उनके नेतृत्व में जो भी कार्य होगा वह अपने आप में उत्तम कोटि का होगा, उन्होंने गुरुकुल वासियों को यह विश्वास दिलाया कि गुरुकुल को स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों के अनुरूप बनाने का प्रयास होगा। गत दिनों में जो कमजोरी जो न्यूनता इस गुरुकुल को देखनी पड़ी है जिनके कारण से गुरुकुल के हालात काफी खराब हुए हैं उनमें इतनी जल्दी से परिवर्तन आना संभव नहीं है फिर भी हमें इसमें शीघ्रताशीघ्र कार्य को आगे बढ़ने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए। गुरुकुल कांगड़ी आर्यो का एक पवित्र स्थान है तथा इसकी पवित्रता को बरकरार रखना निजी कर्त्तव्य है। इस अवसर पर गुरुकुल के अधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी ने गुरुकुल की दयनीय अवस्था के विषय में जानकारी देते हुए कुछ अपने संस्मरणों को बताया। उन्होंने गुरुकुल के विकास के लिए नये भवनों की आवश्यकता बताई तथा यह भी कहा कि इस कार्य में सभी के सहयोग से ही सफलता मिल सकती है। गुरुकुल के कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार जी ने इस अवसर पर यहां गुरुकुल परिषद में पधारने पर सभा का आभार व्यक्त करते हुए यहां पर महसूस की गई अपनी पीड़ा को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि गत लम्बे समय से अनधिकृत अधिकारी यहां की जिम्मेदारी को गलत ढंग से संभाले हुए थे जिसका नतीजा यह हुआ कि गुरुकुल निरन्तर दयनीय अवस्था को प्राप्त होता रहा और कुछ क्रिया कलापों से हालात यहाँ तक पहुँच गए कि कभी जिस विश्वविद्यालय का नाम भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए बनी गरिमा वाली संस्थाओं के रूप में लिया जाता था उसकी विश्वविद्यालय संबंधी मान्यता को ही यू.जी.सी. द्वारा समाप्त कर दिया गया। इसके ऊपर सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्टे मिला हुआ है तथा वर्तमान में यह विश्वविद्यालय सी.ग्रेड की सूची में सूचीबद्ध है जो कि हम सबके लिए एक चिन्ताजनक विषय है। उन्होंने कहा कि यह बात मैं आप सभी के समक्ष रख रहा हूँ ताकि आप सब लोग यह जान सकें कि किन हालातों में इस विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी हमें प्राप्त हुई है। इसी के साथ-साथ उन्होंने कहा कि यदि हम गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी और गुरुकुल देहरादून की चर्चा करें तो यह दोनों संस्थाएं अत्यधिक घाटे (लगभग 7-8 करोड़) में चल रहीं हैं। जिनके बारे में आप सुनकर अत्यन्त चिंतित होंगे उन्होंने इस सारी स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की तथा सभा ही यह विश्वास भी व्यक्त किया कि आचार्य बलदेव जी एवं महाशय धर्मपाल जी के नेतृत्व में हम इन सब चुनौतियों को पार कर लेगें तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस स्वप्न को लेकर के अपने तन-मन-धन व सर्वस्व न्यौछावर करके इसकी स्थापना की थी, उस उद्देश्य के प्रति हम आगे बढ़ सकेगें।

महाशय धर्मपाल आर्य जी तथा आर्य विद्या सभा के अन्य पदाधिकारियों के पधारने पर आयोजित स्वागत समारोह के अवसर पर एक अलग ही दृश्य उपस्थित हो गया इस समारोह मध्य में गुरुकुल के सहायक मुख्य अधिष्ठाता श्री जय प्रकाश विद्यालंकार जी ने जब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य जी को गुरुकुल के नये भवनों की आवश्यकता के सम्बन्ध में सूचित किया तो वही पर महाशय जी की अनुमति से अपील आ गई। महाशय जी ने आर्थिक 15 लाख रुपये का सहयोग घोषित करके समस्त गुरुकुल वासियों में उत्साह का एक वातावरण बना दिया और उसके पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी ने दो लाख 51 हजार रुपये, श्री धर्मपाल आर्य जी ने 1 लाख रुपये एम.डी.एच. परिवार के श्री प्रेमकुमार अरोड़ा जी तथा श्री मनोज गुलाटी जी ने 51 हजार रुपये, दिये। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने 51 हजार रुपये, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने 1 लाख रुपये दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 51 हजार रुपये, आर्य प्रतिनिधि सभा करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी ने 51 हजार रुपये की घोषणा की, वैसे ही उपस्थित सभी आर्य जनो के परिवार के सदस्यों ने एक अद्भुत उत्साह पड़ता चला गया। तत्पश्चात् श्री जयसिंह राव गायकवाड़ जबलपुर ने 51 हजार, श्री दयाराम बसैये ने 25 हजार आर्य प्रतिनिधि सभा औरंगाबाद की ओर से घोषणा हुई थी उपस्थित सभी आर्यजनों ने अपनी आहुति डालने का संकल्प लिया कुलपति श्री सुरेन्द्र कुमार जी द्वारा 21 हजार रुपये की घोषणा के साथ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मान्य प्रध्यापकों महानुभावों ने भी 21 हजार व 11 हजार रुपये की घोषणा की। दिल्ली के युवा कार्यकर्त्ता श्री आशीष आर्य जी ने 21 हजार रुपये की राशि देकर युवाओं को प्रेरित किया। साथ ही अन्य महानुभावों ने भी जिनकी सूची इस समाचार के नीचे अंकित की जा रही है। एक घटना स्मरण योग्य है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी के साथ उनका भतीजे जोकि आर्यसमाज किशनगंज मिल एरिया के श्री वागीश शर्मा जी के सुपुत्र श्री सुविदित शर्मा भी उपस्थित थे वे अपने जीवन में पहली बार ही गुरुकुल कांगड़ी आयें थे। उन्होंने जब इस वातावरण को देखा उन्होंने यह घोषणा की कि अगले महीने मेरी नौकरी आरम्भ होने जा रही है। मैं अपने प्रथम वेतन का आधा भाग इस गुरुकुल को समर्पित करूंगा, उनकी इस घोषणा पर सभी ने उनका स्वागत किया तथा महाशय धर्मपाल जी ने सभी युवा दानियों तथा जिन प्राध्यापकगणों ने इसमें अपना सहयोग दिया उनको उनका स्वयं पुष्प मालाओं से अभिनन्दन किया। उन्होंने यह भी कहा कि अप्रैल में होने वाले वार्षिकोत्सव पर हम इसका उद्घाटन करना चाहेगें।

प्रत्येक व्यक्ति गुरुकुल की उन्नति के लिये कुछ-न-कुछ सहयोग राशि अवश्य भेजे

गुरुकुल के नए भवन के लिए दान देने वाले महानुभावों की सूची

श्री महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच)	1500000
श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल (गुजरात)	251000
श्री धर्मपाल जी आर्य (दिल्ली)	100000
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा	100000
श्री प्रेम अरोड़ा (एम.डी.एच.)	51000
श्री मनोज गुलाटी (एम.डी.एच)	51000
श्री जयसिंह राव गायकवाड (महाराष्ट्र)	51000
श्री कीर्ति शर्मा (दिल्ली)	51000
श्री धर्मेश (गुरुकुल कांगड़ी)	11000
श्री ईश नांरग (दिल्ली)	11000
श्री दयाराम राजाराम (महाराष्ट्र)	25000
डा0 ब्रह्ममुनि जी (महाराष्ट्र)	11000
श्री शिवशंकर गुप्ता (दिल्ली)	21000
श्री विक्रम जी नरूला (दिल्ली)	11000
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड	21000
श्री रवि सचदेवा (एमडीएच)	11000
श्री राजेन्द्र दुर्गा (दिल्ली)	11000
श्री आशीष आर्य (दिल्ली)	21000
आर्य समाज गोविन्द पुरी	11000
श्री एस. पी. सिंह (दिल्ली)	5100
श्री अरूण प्रकाश वर्मा (दिल्ली)	5100
श्री बृजेश सिंह (गुरुकुल कांगडी)	5100
आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ	51000
डॉ. विनय विद्यालंकार, हल्द्वानी	5100
डॉ. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति)	21000
श्री प्रकाश आर्य (इन्दौर)	21000
प्रो. राजेन्द्र अग्रवाल (गुरुकुल कागड़ी)	21000
प्रो.वी.के. शर्मा (गुरुकुल कागड़ी)	21000
डा. राजकुमार रावत (हरिद्वार)	21000
प्रो. ईश्वर भारद्वाज (गुरुकुल कागड़ी)	11000
आर्य समाज लक्सर हरिद्वार	1100
आ.के. मिश्रा (एफ.ओ. गुरुकुल कागड़ी)	11000
श्री अरुण आर्य (इन्दौर)	11000
आचार्य यशपाल (हरियाणा)	21000
डा. करतार सिंह (गुरुकुल कागड़ी)	11000
श्री विनय आर्य (दिल्ली)	11000
प्रो.पी.पी. पाठक (गुरुकुल कागड़ी)	25000
डा. ब्रह्मदेव(गुरुकुल कागड़ी)	11000
डा. प्रमथेश भट्टाचार्य (गुरुकुल कागड़ी)	11000
डा. दीनदयाल जी(गुरुकुल कागड़ी)	5100

श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्री यशपाल आर्य ने एकत्र हुई राशि को 31 लाख रुपये करने का आश्वासन दिया है।

सीताराम येचुरी के 17 सितम्बर को प्रकाशित लेख का उत्तर

आधुनिक समाज में दशहरा पर्व की उपयोगिता

- डॉ. विवेक आर्य

हर वर्ष दशहरा या दीपावली के निकट कुछ कुतर्की लेख विचारों की अभिव्यक्ति के नाम पर तथाकथित साम्यवादी विचारधारा के लोगो द्वारा भिन्न भिन्न मंचों से प्रकाशित किये जाते हैं। इसी श्रृंखला का एक लेख माननीय वामपंथी नेता सीताराम येचुरी द्वारा १७ सितम्बर, 2013 को हिंदुस्तान टाइम्स में "One Size does not fit all" शीर्षक से प्रकाशित हुआ हैं।

जैसा अपेक्षित हैं येचुरी जी ने कुछ शंका पने लेख द्वारा जाहिर की हैं जिनका उद्देश्य श्री रामचन्द्र जी के मर्यादापुरुषोतम जीवन से सामान्य जन की आस्था को भटकाना जैसा प्रतीत होता हैं। वैसे नास्तिकता को बढ़ावा देने की मार्क्सवादी लोगो की इस प्रकार की कुचेष्टा उनकी पुरानी आदत हैं।

येचुरी जी के अनुसार उन्होंने रामायण का ज्ञान अपने दादाजी से मौखिक कहानियों के रूप में सुना हैं।

येचुरी जी की शंकाये इस प्रकार हैं। रामायण के सभी पत्रों में से उत्तर भारत के पात्रों जैसे राम,लक्ष्मण आदि को मनुष्य दिखाया गया हैं जबकि दक्षिण भारत के सभी पत्रों को जैसे हनुमान, सुग्रीव, जामवन्त आदि को मनुष्य रूप के स्थान पर पशु रूप में दिखाया गया हैं। येचुरी जी के अनुसार संभवत रामायण का लेखन उस काल में हुआ था जब आर्य-द्रविड़ संघर्ष चल रहा था इसीलिए दक्षिण के राजकुमार हनुमान द्वारा उत्तर के राजा राम का अभिनन्दन किया गया है।

येचुरी जी का कहना हैं की रावण को भगवान शिवजी से अमर होने का वरदान प्राप्त था एवं राज्य करते हुए वे उकता गये थे, इसलिए नारद मुनि जी की सहायता से उन्होंने मृत्यु का वरण करने के लिए भगवान रूपी श्री राम जी का अवतार करवाया और फिर अपने भाई विभीषण के माध्यम से अपनी मृत्यु का रहस्य श्री राम को बतलाया क्यूंकि उसके बिना उसका मारना असंभव था। सीता का हरण भी रावण द्वारा इसी प्रयोजन के लिए किया गया था यही कारण हैं की जब तक सीता लंका में अशोक वाटिका में रही रावण ने कभी भी उनके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास नहीं किया। इसलिए दशहरा पर्व को बुराई पर अच्छाई की जीत के स्थान पर रावण के मोक्ष प्राप्ति के पर्व के रूप में बनाना चाहिये।

हमारी येचुरी जी से प्रार्थना है कि एक बार वाल्मीकि रामायण को दादा-दादी की कहानियों के रूप में जानने के स्थान पर बुद्धिजीवी के रूप में सीधे प्रमाणित पुस्तक से देखने का कष्ट करें क्योंकि उन्हें जितनी भी भ्रांतियां हुई हैं उसका कारण उनका इस विषय पर अधूरा ज्ञान हैं।

हनुमान, सुग्रीव आदि के विषय में उनका कहना हैं की वे दक्षिण भारतीय होने के कारण पशु रूप में चित्रित हैं, यह भेदभाव आर्य-द्रविड़ युद्ध के कारण हुआ हैं।

येचुरी जी आपको जानकर प्रसन्नता होगी की वैदिक वांग्मय के विशेषज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कथन इस विषय में मार्ग दर्शक है। स्वामीजी के अनुसार संस्कृत ग्रन्थ में या इतिहास में नहीं लिखा की आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों को लड़कर, जय पाकर, निकाल कर इस देश के राजा हुए (सन्दर्भ-सत्यार्थ प्रकाश ८ सम्मुलास), जो आर्य श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं वैसे ही मैं भी मानता हूँ, आर्यवर्त्त देश इस भूमि का नाम इसलिए है की इसमें आदि सृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं परन्तु इसकी अवधि उत्तर में हिमालय दक्षिण में विन्ध्याचल पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रहमपुत्र नदी है। इन चारों के बीच में जितना प्रदेश है उसको आर्यावर्त्त कहते हैं और जो इसमें सदा रहते हैं उनको भी आर्य कहते हैं। ***(सन्दर्भ-स्वमंतव्यामंतव्य प्रकाश- स्वामी दयानन्द)***

१३५ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द द्वारा आर्यों के भारत पर आक्रमण की मिथक थ्योरी के खंडन में दिए गये तर्क का खंडन अभी तक कोई भी विदेशी अथवा उनका अँधानुसरण करने वाले मार्क्सवादी इतिहासकार नहीं कर पाए हैं। एक कपोल कल्पित, आधार रहित, प्रमाण रहित बात को बार-बार इतना प्रचार करने का उद्देश्य विदेशी इतिहासकारों की 'बाटों और राज करो की कुटिल नीति' को प्रोत्साहन देने के समान हैं जो भारत देश के एक सर्वोच्च नेता के कलम से तो कभी नहीं होना चाहिये, जिन्होंने देश की अखंडता और एकता को बनाये रखने के लिए पद और गोपनीयता की शपथ ली हैं।

सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण से ही प्राप्त "वानर" शब्द पर विचार करते हैं। सामान्य रूप से हम "वानर" शब्द से यह अभिप्रेत कर लेते हैं की वानर का अर्थ होता हैं बन्दर परन्तु अगर इस शब्द का विश्लेषण करें तो वानर शब्द का अर्थ होता हैं वन में उत्पन्न होने वाले अन्न को ग्रहण करने वाला। जैसे पर्वत अर्थात गिरि में रहने वाले और वहाँ का अन्न ग्रहण करने वाले को गिरिजन कहते हैं उसी प्रकार वन में रहने वाले को वानर कहते हैं। वानर शब्द से किसी योनि विशेष, जाति , प्रजाति अथवा उपजाति का बोध नहीं होता।

सुग्रीव, बालि आदि का जो चित्र हम देखते हैं उसमें उनकी पूंछ दिखाई देती हैं, परन्तु उनकी स्त्रियों के कोई पूंछ नहीं होती? नर-मादा का ऐसा भेद संसार में किसी भी वर्ग में देखने को नहीं मिलता। इसलिए यह स्पष्ट होता हैं की हनुमान आदि के पूंछ होना केवल एक चित्रकार की कल्पना मात्र हैं।

किष्किन्धा कांड (3/28-32) में जब श्री रामचंद्र जी महाराज की पहली बार ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से भेंट हुई तब दोनों में परस्पर बातचीत के पश्चात रामचन्द्र जी लक्ष्मण से बोले -

न अन् ऋग्वेद विनीतस्य न अ यजुर्वेद धारिणः। न अ-साम वेद विदुषः शक्यम् एवम् विभाषितुम्।

(४-३-२८)

"ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं हैं तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है, वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होनें सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अभ्यास किया हैं, क्योंकि इतने समय तक बोलने में इन्होनें किसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार संपन्न, शास्त्रीय पद्धति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी हृदय को हर्षित कर देती है।"

सुंदर कांड (30/18, 20) में जब हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले हनुमान जी सोचते हैं -

"यदि द्विजाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भय से संत्रस्त हो जाएगी। मेरे इस वनवासी रूप को देखकर तथा नागरिक संस्कृत को सुनकर पहले ही राक्षसों से डरी हुई यह सीता और भयभीत हो जाएगी। मुझको कामरूपी रावण समझकर भयातुर विशालाक्षी सीता कोलाहल आरंभ कर देगी। इसलिए मैं सामान्य नागरिक के समान परिमार्जित भाषा का प्रयोग करूँगा।"

इस प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं की हनुमान जी चारों वेद, व्याकरण और संस्कृत सहित अनेक भाषायों के ज्ञाता भी थे। हनुमान जी के अतिरिक्त अन्य वानर जैसे की बालि पुत्र अंगद का भी वर्णन वाल्मीकि रामायण में संसार के श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में किष्किन्धा कांड 54/2 में हुआ है।

हनुमान बालि पुत्र अंगद को अष्टांग बुद्धि से सम्पन्न, चार प्रकार के बल से युक्त और राजनीति के चौदह गुणों से युक्त मानते थे।

बुद्धि के यह आठ अंग हैं- सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, ऊहापोह करना, अर्थ या तात्पर्य को ठीक ठीक समझना, विज्ञान व तत्वज्ञान।

चार प्रकार के बल हैं- साम , दाम, दंड और भेद।

राजनीति के चौदह गुण हैं- देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्ट सहिष्णुता, सर्व विज्ञानता, दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, तज्ञता, शरणागत वत्सलता, अधर्म के प्रति क्रोध और गंभीरता।

भला इतने गुणों से सुशोभित अंगद बन्दर कहाँ से हो सकता हैं?

अंगद की माता तारा के विषय में मरते समय किष्किन्धा कांड 16/12 में बालि ने कहा था कि-

"सुषेण की पुत्री यह तारा सूक्ष्म विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में सर्वथा निपुण हैं। जिस कार्य को यह अच्छा बताए, उसे निःशंक होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता।"

किष्किन्धा कांड (25/30) में बालि के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने आज्ञा दी मेरे ज्येष्ठ बन्धु आर्य का संस्कार राजकीय नियन के अनुसार शास्त्र अनुकूल किया जाये।

किष्किन्धा कांड (26/10) में सुग्रीव का राजतिलक हवन और मन्त्रादि के साथ विद्वानों ने किया।

जहाँ तक जाम्बवान के रीछ होने का प्रश्न हैं। जब युद्ध में राम-लक्ष्मण मेघनाद के ब्रह्मास्त्र से घायल हो गए थे तब किसी को भी उस संकट से बाहर निकलने का उपाय नहीं सूझ रहा था। तब विभीषण और हनुमान जाम्बवान के पास गये तब जाम्बवान ने हनुमान को हिमालय जाकर ऋषभ नामक पर्वत और कैलाश नामक पर्वत से संजीवनी नामक औषधि लाने को कहा था।

(सन्दर्भ युद्ध कांड सर्ग 74/31-34)

आपत काल में बुद्धिमान और विद्वान जनों से संकट का हल पूछा जाता हैं और युद्ध जैसे काल में ऐसा निर्णय किसी अत्यंत बुद्धिवान और विचारवान व्यक्ति से पूछा जाता हैं। पशु-पक्षी आदि से ऐसे संकट काल में उपाय पूछना सर्वप्रथम तो संभव ही नहीं हैं दूसरे बुद्धि से परे की बात हैं।

इन सब वर्णन और विवरणों को बुद्धि पूर्वक पढने के पश्चात कौन मान सकता हैं की हनुमान, बालि , सुग्रीव आदि विद्वान एवं बुद्धिमान मनुष्य न होकर बन्दर आदि थे।

- शेष पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज द्वारा उत्तराखण्ड में चलाए जा रहे राहत कार्यों को देखते हुए सैनिक विहार आर. डब्ल्यू.ए. एवं रानी बाग व्यापार मंडल दोनों ने मिलकर लगभग 10 लाख रुपये की राशि की राहत सामग्री उत्तराखण्ड में पीड़ितों को वितरणार्थ आर्यसमाज रानी बाग के माध्यम से आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को सौंपी। इस अवसर पर उत्तराखण्ड के प्रभावित क्षत्रों में जाकर आर्यसमाज की ओर से सेवा कार्य करने के लिए सर्वश्री विजेन्द्र आर्य, संजीव आर्य एवं वीरेन्द्र आर्य एवं सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी का स्वागत भी किया गया।

इस अवसर पर क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री देवराज अरोड़ा, कांग्रेस के सदस्य श्री कमलकांत शर्मा, आर्यसमाज रानी बाग के मन्त्री श्री यज्ञदत्त आर्य, सैनिक विहार एसोशिएसन के प्रधान श्री प्रमोद गुम्बर, रानी बाग व्यापार मंडल के प्रधान श्री रमेश भाटिया, सचिव श्री सुदर्शन गुप्ता, चेयरमैन श्री अवतार सिंह नरुला, उप चेयरमैन एवं आर्यसमाज के प्रधान श्री जोगेन्द्र खट्टर, सुनील दुआ, श्री राकेश बजाज एवं श्री विजय धवन सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन महर्षि दयानन्द चौक रानीबाग एवं सैनिक विहार पर किया गया।

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली में

श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर का श्रावणी पर्व 5 से 8 सितम्बर 2013 तक हर्षोल्लास के साथ सम्मपन हुआ जिसमें श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) के भजन व आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक (होशंगाबाद) के वेदोपदेश हुए, जिनका जनता पर बहुत प्रभाव रहा तथा समापन समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी का मुख्यतया उद्‌बोधन हुआ। अन्य भी कई विद्वानों ने सभी जनता का मार्ग दर्शन किया। इसी प्रकार श्रावणी पर्व सम्पन्न हुआ। - ***जयसिंह वर्मा, मन्त्री***

आर्यसमाज नया बांस दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज नया बांस दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह 22 अगस्त से 28 अगस्त तक सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. भानुप्रकाश शास्त्री बरेली के मधुर भजन व उपदेश हुए। प्रतिदिन यज्ञ समाज के पुरोहित श्री सहदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में होता रहा।

-भूपेन्द्र देव वर्मा, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2, नई दिल्ली-110048

प्रधान : श्री प्रियव्रत
मन्त्री : श्री सहदेव नांगिया
कोषाध्यक्ष : श्री एस. के. कोहली

आर्यसमाज पटेल नगर नई दिल्ली-110008

प्रधान : श्री पुरुषोत्तम लाल आनन्द
मन्त्री : श्री राजीव कान्त कुमार
कोषाध्यक्ष : श्री सुषमा आहूजा

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश

संचालक : श्री जगबीर आर्य
महामन्त्री : श्री बृहस्पति आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री जितेन्द्र भाटिया

आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद (उ.प्र.)

प्रधान : श्री जयपाल सिंह आर्य
मन्त्री : श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सत्यवीर चौधरी

वेद प्रचार मंडल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली

प्रधान : श्री सुरेन्द्र आर्य
मन्त्री : श्री जोगेन्द्र खट्‌टर
कोषाध्यक्ष : श्री व्रतपाल भगत

आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गांव (हरियाणा)

प्रधान : श्री भारत भूषण आर्य
मन्त्री : श्री प्रवीण मदान
कोषाध्यक्ष : श्री शिवदत्त आर्य

आर्य समाज बैजनाथपरा रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रधान : श्री दयाराम वर्मा
मन्त्री : श्री केशवराम श्रीवास
कोषाध्यक्ष : डॉ. एम. एल. साहू

आर्य समाज रोहिणी, सैक्टर-7 का वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

29 अगस्त से 1 सितम्बर 2013 तक आर्य समाज सै. 7 रोहिणी का वेद प्रचार समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रभातफेरी निकाली गई। प्रात: गायत्री महायज्ञ-मधुर भजन प्रवचन, रात्रिकालीन-भक्ति संगीत एवं वेदकथा का सभी नर-नारियों व युवाओं ने आनन्द उठाया। समापन के अवसर पर ग्यारह कुण्डीय गायत्री-महायज्ञ आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा-डॉ. शिव कुमार शास्त्री, उपाचार्य-राम किशोर शास्त्री थे। ओ३म् ध्वजारोहण-श्रीमती-पूजा एवं नितिन मित्तल 'एडवोकेट' ने किया। वेद सम्मेलन व समापन समारोह का सानिध्य-श्री सुखदेव आर्य तपस्वी जी एवं अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र आर्य 'प्रधान' (उ.प. वेद प्र.म.) ने की। भजनोपदेश श्री श्यामवीर राघव के हुए। मन्त्री-राजीव आर्य ने मंच संचालन किया। समारोह में श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, डॉ. अनिल आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य श्री ताराचन्द वंसल (निगम पार्षद) डॉ. नीलम गोयल (निगम पार्षद) श्री राजकुमार जैन, डॉ. विपुल नैय्यर आदि अतिथिगण उपस्थित थे। - **शिव कुमार गुप्ता, प्रधान**

चार दिवसीय सामवेद यज्ञ

आर्य समाज अशोक विहार-1 दिल्ली में 22 से 25 अगस्त श्रावणी पर्व पर विशेष वेद कथा एवं चतुर्दिवसीय सामवेदीय बृहद् यज्ञ-डॉ. राजू वैज्ञानिक और पं. विजय भूषण आर्य के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग 80 स्कूल के बच्चों ने भी भाग लिया। इन बच्चों ने 'ऐसे थे भगवान श्रीकृष्ण' विषय पर भाषण देकर एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर 'एक शाम भगवान श्रीकृष्ण के नाम' का आयोजन 28 अगस्त को सायं 6 बजे से हुआ जिसमें डॉ. महेश विद्यालंकार और पं. सतीश चन्द्र शास्त्री द्वारा वैदिक शंखनाद और सुन्दर भजनों की प्रस्तुति हुई। - **जीवनलाल आर्य, मन्त्री**

पुरस्कारों हेतु नाम आमन्त्रित

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ वर्ष - 2013-14 के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती हैं।

1) वेद-वेदांग पुरस्कार; 2) वेदोपदेशक पुरस्कार; 3) श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार; 4) श्रीमती लीलावती महाशय 'आर्य महिला पुरस्कार'; 5) पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार; 6) श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार; 7) श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान पुरस्कार; 8) श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार; 9) श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार; 10) श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार; 11) श्रीमती शिवराजवती आर्या ''बाल पुरस्कार''; 12) श्री हरभगवानदास गांधी ''मेधावी पुरस्कार''। जो विद्वान्/आर्य बन्धु किसी विद्वान का नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान् के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे ग्रन्थों की सूची एवम् प्रति सहित विस्तृत जानकारी 30.9.2013 तक भेजने की कृपा करें। प्रस्तावित नामों के आधार पर निर्णायक मण्डल वर्ष 2013-14 के लिये उपरोक्त पुरस्कारों के लिये विद्वान का चयन करेगा। अन्तिम निर्णय का अधिकार आर्य समाज सान्ताक्रुज़ (प.) मुम्बई की अन्तरंग सभा के पास सुरक्षित होगा। - **संगीत आर्य, संयोजक**

खेद व्यक्त

खेद है कि आर्य सन्देश के गत अंक में प्रथम पृष्ठ प्रकाशित सूचनाओं के शेष पृष्ठ 6-7 के बजाय पृष्ठ 8-9 पर दिए गए हैं। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

महर्षि दयानन्द सत्संग भवन का शिलान्यास

आर्य समाज जवाहर नगर पलवल के विशाल प्रांगण में आज सायंकाल 7:00 बजें महर्षि दयानन्द सत्संग भवन का शिलान्यास श्री लक्ष्मणदेव छाबड़ा, मन्त्री आर्यसामाज मानसरोवर गार्डन दिल्ली एवं स्वामी जगदीश्वरानन्द हसनपुर के कर-कमलों द्वारा विधिवत सम्पन्न हुआ। छाबड़ा परिवार ने एक लाख ग्यारह हजार का सात्विक दान देकर इस शुभ कार्य में अपना योगदान भी दिया। शिलान्यास का कार्य श्री देसराज शुक्ल ने क्षेत्र के गणमान्य आर्यों की उपस्थिति में यज्ञ द्वारा कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. धर्मप्रकाश आर्य पूर्व डायरेक्टर जनरल स्वास्थ्य विभाग ने की।

चतुर्वेद शतक यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज पटेल नगर के तत्त्वाधान में श्रावणी के पवित्र अवसर पर चतुर्वेद शतक यज्ञ 5 से 11 अगस्त तक प्रधान श्री पुरुषोत्तमलाल आनन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा-आचार्य अमोल व सहयोगी आचार्य अमरदेव जी ने यजमानों व श्रोताओं को अपनी मुधरवाणी से मन्त्र-मुग्ध किया और यज्ञ का समापन किया। - ***मन्त्री***

विदेश में पहली बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में पहली बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ कनाडा के आर्यसमाज मारखम, टोरंटो के विशाल प्रांगण में श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात् किया। आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने विशाल जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ से पर्यावरण शुद्धि, सभी शुभकामनाओं की पूर्ति, दान, संगतिकरण और देव पूजा से प्रति, ईश्वर से निकटता, सद् विचारों में वृद्धि और अंतत: मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मुख्य यजमान श्रीमती लता एवं श्री भास्कर पटनी थे। इस यज्ञ में 200 परिवारों ने यजमान बनकर पुण्यलाभ प्राप्त किया।

शोक समाचार

श्री अशोक सहगल को भ्रातृशोक

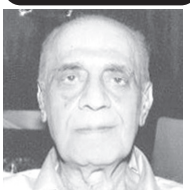

हिन्दू शुद्धि सभा के पूर्व प्रधान स्व. श्री द्वारकानाथ सहगल जी के ज्येष्ठ सुपुत्र एवं आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के प्रधान श्री अशोक सहगल जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री सुरेन्द्र सहगल जी को दिनांक 22 अगस्त, 2013 को निधन हो गया। वे एक मधुर गायक भी थे।

24 अगस्त को आर्यसमाज राजेन्द्र नगर में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें अनेक आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों के साथ साथ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. भारद्वाज पाण्डेय, आचार्य श्यामदेव, आचार्य कैलाश चन्द्र, श्री भानुप्रकाश, डॉ. अशोक चौहान, निगम पार्षद श्री राजेश भाटिया आदि ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर परिवार की ओर से विभिन्न संस्थाओं को डेढ़ लाख रुपये का दान भी दिया गया।

श्री शनिलाल एम. शर्मा का निधन

आर्यसमाज बडौदा (गुजरात) के पूर्व मन्त्री, वैदिक विद्वान प्रवक्ता और प्रचारक श्री शनिलाल एम. शर्मा का दिनांक 18 अगस्त को निधन हो गया। वे धरोहर के रूप में अपने तीन पुत्रों को अपने शेष कार्यों को सौंप कर गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्‌गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

(विश्व वेद सम्मेलन) 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** एवं **आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 को द. अफ्रीका की राजधानी डरबन में** सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि डरबन पहुंच रहे हैं। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुंचेंगे। सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही द. अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगी।** अनेकों आर्यजन डरबन सम्मेलन के इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इस कारण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डरबन के अतिरिक्त द. अफ्रीका के अन्य स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा का भी कार्यक्रम बनाया गया है। आवेदन की **अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2013 तक बढ़ा दी गई है।** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - **श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, यात्रा संयोजक - 09824072509**

भव्य दक्षिण अफ्रीका यात्रा नं. 1 (15 रत्रि 16 दिन)

19 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013

प्रस्थान : दिनांक 19 नवम्बर की मध्यरात्रि को मुम्बई/दिल्ली से जोहान्सबर्ग, द. अफ्रीका हेतु प्रस्थान (मुम्बई से 20 नवम्बर को 02:05 बजे तथा दिल्ली से 20 नवम्बर को 0:45 बजे) **वापसी :** दिनांक 3 दिसम्बर को डरबन से भारत।

उक्त यात्रा में सनसिटी, जोहान्सबर्ग, केपटाउन, नाइसना तथा डरबन के सभी महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों को दिखाया जाएगा। यात्रा की **कुल राशि प्रति व्यक्ति 1,85,000/- रु0 (मुम्बई से)** तथा **1,90,000/- रु. (दिल्ली से)** होगी।

भव्य दक्षिण अफ्रीका यात्रा नं. 2 (7 रत्रि 8 दिन)

27 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013

प्रस्थान : दिनांक 27 नवम्बर की मध्यरात्रि को मुम्बई/दिल्ली से जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका हेतु प्रस्थान (मुम्बई से 28 नवम्बर को 02:05 बजे तथा दिल्ली से 28 नवम्बर को 0:45 बजे) **वापसी :** दिनांक 3 दिसम्बर को डरबन से भारत

केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने वाले सभी आर्य बन्धुओं को डरबन में 1.5 दिन भ्रमण भी कराया जाएगा। इस यात्रा की **कुल व्यय राशि मुम्बई से 90,000/- रुपये** तथा **दिल्ली से 95,000/- रुपये प्रति व्यक्ति होगी।**

निश्चित की गई राशि में हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय तथा डोमैस्टिक टिकटें, वीजा, बीमा (75 वर्ष तक), सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकट, मिनरल वाटर आदि के सभी खर्चे शामिल हैं। केवल बस ड्राइवर को दी जाने वाली टिप सम्मिलित नहीं है।

विस्तृत जानकारी/यात्रा विवरण/आवेदन पत्र हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात सृष्टि के आदि में जो अन्य स्त्री व पुरुष उत्पन्न हुए थे, उन्हें ब्रह्माजी ने वेदों का ज्ञान कराया। यहां यह शंका होती है कि क्या अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा ने, ब्रह्माजी को वेदों का ज्ञान देते समय या उसके बाद, अन्य-अन्य तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त किया अथवा नहीं। हमें लगता है कि इस विषय में हमारे शास्त्र व आप्त वचन आदि उपलब्ध नहीं हैं। इसमें क्या रहस्य है? सामान्य स्थिति में हमें लगता है कि अग्नि, वायु आदि चार ऋषियों ने भी अन्य-अन्य तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त किया होगा जो उन्हें ईश्वर से प्राप्त नहीं हुआ था। यह प्रक्रिया इस प्रकार रही होगी कि ब्रह्माजी को ईश्वरीय प्रेरणा हुई होगी कि वह उन चार ऋषियों से चार वेदों का ज्ञान प्राप्त करें और अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा ऋषियों को प्रेरणा हुई होगी कि वह ब्रह्माजी को वेदों का ज्ञान करायें। इसके लिए पांचों ऋषि एक स्थान पर, ईश्वरीय प्रेरणा से, उपस्थित हुए होगें। वैदिक भाषा का ज्ञान ब्रह्माजी सहित आदि सृष्टि में उत्पन्न सभी मनुष्यों को पहले ही जीवस्थ स्वरूप से ईश्वर ने कराया था। जिस प्रकार गुरु पाठशाला में या गुरुकुल में विद्यार्थियों को बैठाकर उनके सम्मुख स्वयं बैठकर व बोल कर उपदेश द्वारा ज्ञान कराता है इसी प्रकार पहले अग्नि ऋषि ने ब्रह्मा, वायु, आदित्य व अंगिरा को ऋग्वेद का ज्ञान कराया होगा। फिर वायु ऋषि ने ब्रह्मा, अग्नि, आदित्य व अंगिरा को यजुर्वेद का ज्ञान कराया होगा। इसी प्रकार आदित्य व अंगिरा ने अन्य-अन्य चार ऋषियों को सामवेद व अर्थववेद का ज्ञान कराया होगा। यह स्वाभाविक है कि जब अग्नि ब्रह्माजी को ऋग्वेद का ज्ञान करा रहे होंगे तो वायु, आदित्य व अंगिरा खाली नहीं बैठे होंगे, वह भी सुन रहे होंगे और उन्हें भी ज्ञान हो गया होगा। हो सकता है कि कुछ विद्वान व पाठक हमारे इस विचार से सहमत न हों। उनसे हम अपेक्षा करते हैं कि वह इससे जुड़े प्रश्नों का समाधान करें। यहां यह भी विदित होता है कि अग्नि आदि ऋषियों ने मन्त्रोच्चार के साथ मन्त्रों के अर्थ भी बताये होंगे अन्यथा उन्हें व अन्य ऋषियों को अर्थ ज्ञात न होते। अन्य ऋषियों ने भी अग्नि ऋषि का अनुसरण किया होगा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ब्रह्मा, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा साथ-साथ चार वेद अर्थसहित ज्ञात हुए। हम इस सम्बन्ध में विद्वानों व पाठकों की प्रतिक्रिया जानना चाहते हैं।

पांच ऋषियों के वेदज्ञ हो जाने पर, परमात्मा ने अन्य जो युवा स्त्री व पुरुष उत्पन्न किए थे, उन्हें वेदों का ज्ञान प्रदान किया जाना उनका लक्ष्य रहा होगा। क्योंकि इनमें से किसी एक या सबका खाली बैठना सम्भव नहीं था। हम अनुभव करते हैं कि इसके लिए उन सभी स्त्री-पुरुषों को पांच कक्षाओं में बांटकर एक-एक कक्षा को एक-एक ऋषि ने उपदेश-श्रवण-विधि से अध्ययन कराया होगा। और धीरे-धीरे सभी स्त्री-पुरुषों को वेदों का ज्ञान हो गया होगा। हमारा अध्ययन व विवेक हमें बताता है कि प्राचीन काल के इन मनुष्यों की शारीरिक बल व बुद्धि की क्षमता आज के मनुष्यों से कहीं अधिक थी। इसलिए उनका वेदों को स्मरण करना व समझना आज के लोगों से कहीं अधिक सरल था। इसके साथ वेदों के ज्ञान के साथ उन्हें अपने भोजन आदि का भी ज्ञान हो गया होगा। वृक्षों पर फल व गो-दुग्ध तो पर्याप्त रहा ही होगा जिससे इन आदि वासियों ने अपने आहार की समस्या का निदान किया होगा। ऋषि दयानन्द ने कहीं यह कहा है कि पांच वर्षों तक इन मनुष्यों में बालकपन के समान अवस्था थी जिससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इस समयावधि में इनमें कामवासना आदि का विचार नहीं आया था। इस बीच इन्होंने कृषि कार्यों, गोपालन व संवर्धन, रूई से वस्त्र निर्माण आदि, जिसका ज्ञान वेदों से प्राप्त हो गया होगा, इन्होंने कर लिया होगा और पांच वर्षों में सब सामान्य रूप से पूर्णत: वेदों के अनुसार जीवन व्यतीत करने लगे होंगे। इसके साथ ही यज्ञ, सत्संग, अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय, ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के कार्य भी आरम्भ होकर अनेक सफलतायें प्राप्त कर ली गई होंगी और पांच वर्ष पश्चात् इनको सामान्य जीवन व्यतीत करने में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं रही होगी। यदि कभी कोई समस्या आती होगी तो उसका समाधान वेद के आधार पर निकल जाता होगा। आगे सृष्टि किस प्रकार आगे बढ़ी इसका कुछ इतिहास तो उपलब्ध है व अनुमान से भी उसे जाना जा सकता है। यह भी चर्चा कर लेना समीचीन है कि वैदिक प्राचीन साहित्य व बाद के स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों से यह ज्ञात नहीं होता कि अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा आदि चार ऋषियों ने परस्पर या ब्रह्माजी से तीन-तीन वेदों के ज्ञान का आदान-प्रदान किया अथवा नहीं। यह भी विदित नहीं होता है कि क्या सृष्टि के आदि काल में उत्पन्न अन्य स्त्री व पुरुषों को इन्होंने वेदाध्ययन-अध्यापन कराया अथवा नहीं। जैसा कि सुविदित तथ्य है कि कोई भी विद्वान खाली नहीं बैठ सकता, वह भी तब, जब कि उसके आस-पास अशिक्षित-ज्ञानेच्छु व अज्ञानी लोग हों। अत: यदि इन ऋषियों का ब्रह्माजी को ज्ञान प्राप्त कराने के एकदम बाद संसार से प्रस्थान न हुआ होगा, तो हमें लगता है कि निश्चित रूप से इन्होंने पूर्व ही परस्पर वा ब्रह्माजी से अन्य-अन्य तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त कर अध्यापन व पढ़ाने का कार्य अवश्य किया होगा। इन ऋषियों ने ब्रह्माजी की भांति विवाह करके अपनी सन्तति आगे बढ़ाई या नहीं, यह भी पता नहीं चलता। इन चार ऋषियों के बारे में हमारा वैदिक साहित्य मौन क्यों हैं, यह रहस्यमय प्रतीत होता है। यहां विद्वानों से अपने विवेक से इस समस्या का समाधान अपेक्षित है। एक अन्य प्रश्न भी सामने है। सृष्टि के आदि काल युवा पुरुषों के समान युवती स्त्रियां भी अवश्य उत्पन्न हुई होंगी। इन्हें भी ब्रह्माजी ने पुत्रीवत् वा भगिनीवत् वेदों का ज्ञान दिया होगा। यद्यपि वैदिक परम्परा में स्त्रियों को स्त्रियों से ही ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा है, अत: यह अपवाद स्वरूप हुआ प्रतीत होता है, क्योंकि सृष्टि के अमैथुनी होने जैसा यह अपवाद आवश्यक था। ब्रह्माजी से वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात इन स्त्रियों ने स्त्रियों को अध्ययन कराना आरम्भ कर दिया होगा, ऐसी सम्भावना प्रतीत होती है।

इस लेख में हमने वेदों के आविर्भाव पर विचार कर यह जाना है कि ईश्वर से चार ऋषियों को ज्ञान प्राप्त हुआ और उसके पश्चात् ब्रह्माजी सहित पांच ऋषि चतुर्वेदी अर्थात् चारों वेदों के ज्ञाता हो गये। ईश्वर वेदों का ज्ञान दे सकता है व देता है, इस पर भी विचार किया गया है। हम समझते हैं पाठक व विद्वान हमारे विचारों पर अपनी सहमति व प्रतिक्रियाओं से अवगत करायेंगे।

- 196 चुक्खूवाला ब्लाक-2
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)
फोन: 09412985121

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 16 सितम्बर, 2013 से रविवार 22 सितम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19/20 सितम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 सितम्बर, 2013

पृष्ठ 5 का शेष

जहाँ तक रावण के अमरत्व का प्रश्न हैं सृष्टी का एक नियम हैं की जिस भी वस्तु की उत्पत्ति हुई हैं एक दिन उसका नाश निश्चित हैं। जो ईश्वर रावण को जन्म दे सकते हैं वह उसे मृत्यु क्यूँ नहीं प्रदान कर सकते? क्या शिवरुपी ईश्वर अज्ञानी हैं जो अमरत्व का वरदान ऐसे व्यक्ति को देंगे को क्रूर और अत्याचारी होगा, जिसके राक्षस ऋषि मुनियों के यज्ञ में माँस आदि के टुकड़े फैंक कर उसमें विघ्न डालते हो, जिसकी बहन चरित्रहीन की भान्ति विवाहित पुरुषों पर मोहित होकर उन पर डोरे डालती हो, जो अपने भाई को लात मारकर अपने राज्य से निकल देता हो, जो एक अकेली स्त्री का छल से अपहरण करता हो, जो अपने अहंकार के लिए अपने भाइयों, अपने पुत्रों, अपने सभी सरदारों को मरवा डालता हो?

येचुरी जी को मोक्ष की परिभाषा मालूम होती तो वह रावण के हनन की मोक्ष से तुलना कभी नहीं करते। फिर तो सभी आतंकवादियों, सभी बलात्कारियों को फाँसी पर चढ़ाये जाने को मोक्ष कहा जायेगा।

दशहरा पर्व का सन्देश आज भी कितना प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं पाठक पढ़र विचार मंथन करेंगे ।

उस काल में रावण को सीता का अपहरण करने का दंड श्री रामचन्द्र जी ने उसके प्राणों को घात कर दिया था आज तो गली गली में २-२, ४-४ वर्ष की बच्चियों से लेकर ८५ वर्ष तक की महिला के साथ न जाने क्या क्या हो रहा हैं उन पापियों को उससे भी अधिक कठोर दंड मिलना चाहिये। ऐसे बलात्कारियों का, आधुनिक रावणों का सार्वजानिक रूप से जिन्दा दहन करना दशहरे के अवसर पर सबसे उचित तरीका कहा जायेगा बशर्ते की मानवाधिकार का ढोल वामपंथी इसमें अच्चन न डाले। हमारे इस कथन से सभी सामान्य पाठक समर्थन करेंगे ऐसा इस लेख लो लिखने का उद्देश्य है।

दानवीर लाला दीवानचन्द जन्मदिवस पर यज्ञ

24 सितम्बर प्रात: 10 बजे

स्थान : ट्रस्ट परिसर, 2 जैन मन्दिर मार्ग, न.दि.

आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

गो-कथा

27-29 सितम्बर 2013

द्वारा : पं. धूमसिंह गौवंशी जी

स्थान : 243, ए.जी.सी.आर. एन्कलेव दिल्ली के सामने पार्क में

दयानन्द मठ, दीनानगर की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18-20 अक्तूबर, 2013

समारोह के मुख्य आकर्षण

ध्यान एवं योग साधना, ध्वजारोहण, वेद सम्मेलन, संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन, युवा सम्मेलन, शोभा यात्रा, संध्या यज्ञ भजन एवं प्रवचन, संगीतमय आर्य सिद्धान्त सम्मेलन, यज्ञ पूर्णाहुति एवं आर्य महासम्मेलन।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधाकर समारोह को सफल बनाएं

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

मो. 9478256272

प्रतिष्ठा में,

संगीतमय श्रीराम कथा एवं गायत्री महायज्ञ

7-12 अक्तूबर 2013

द्वारा : श्रद्धेय पं. कुलदीप आर्य जी

स्थान : श्री सत्यसनातन वेद मन्दिर, सै. 8, पॉ. डी-12, रोहिणी, दिल्ली-85

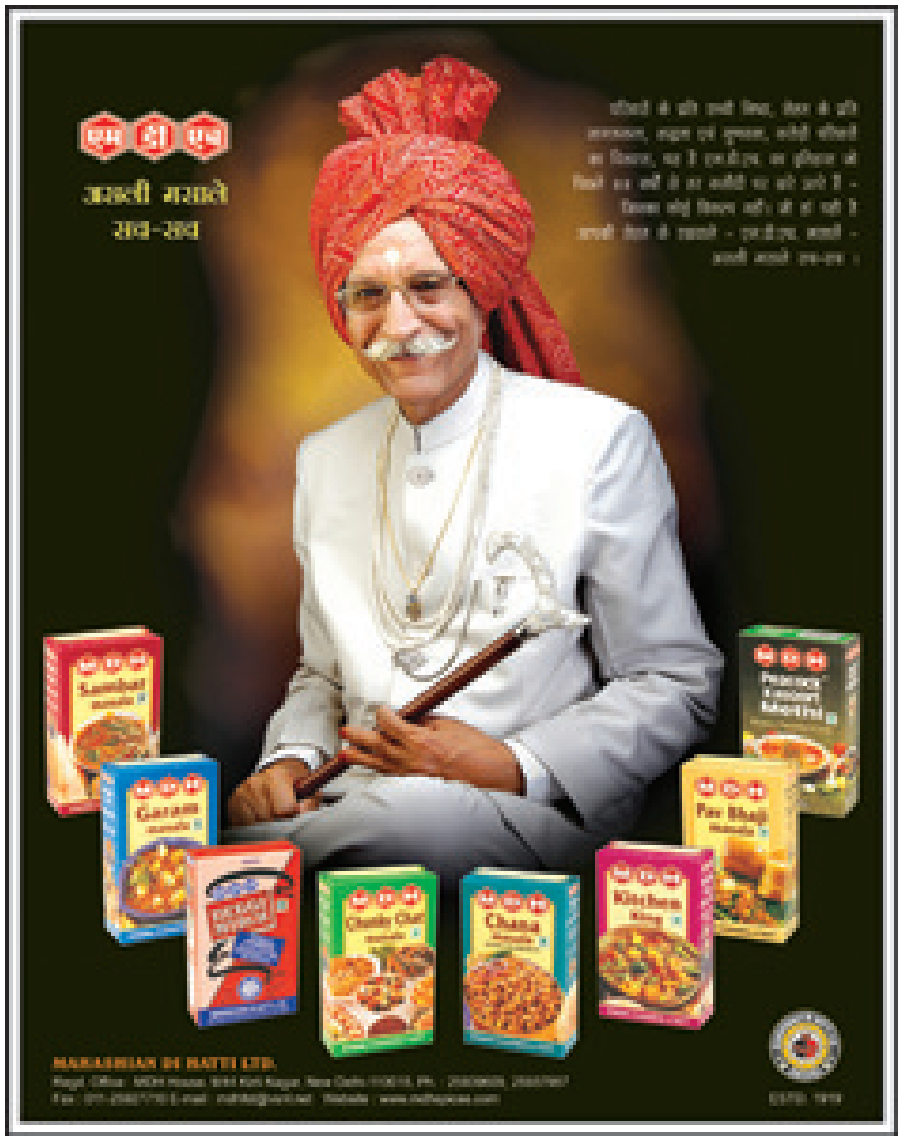

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर